समय : २:३० घंटे **पूर्णांक : ७५**

सूचना : १. सभी प्रश्न अनिवार्य है |

२. सभी प्रश्नों के लिए अंक समान है |

३. उत्तर पत्रिका में प्रश्न क्रमांक व उप क्रमांक अवश्य लिखें |

प्रश्न १. निम्नलिखित में से किन्ही दो अवतरण की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए | **(३०)**

(क) "उद्धव मन अभिलाष बढायों |
जदुपति जोग जानि जिय साँचो नयन अकास चढायों ||
नारिन पै मोको पठवत हो कहत सिखावन जोग |
मन ही मन अब करत प्रसंसा है मिथ्या सुख-भोग ||
आयसु मानि लियो सिर ऊपर प्रभु-आज्ञा परमान |
सूरदास प्रभु पठवत गोकुल मैं क्यों कहौं कि आन ||"

(ख) "जड़ चेतन मग जीव घनेर | जे चितए प्रभु जिन्ह प्रभु हेरे ||
ते सब भए परम पद जोगू | भरत दरस मेटा भव रोगू ||
ये बडि बात भरत कइ नाहीं | सुमिरत जिनहि रामु मन माहीं ||
बारक राम कहत जग जेऊ | होत तरन तारन नर तेऊ ||
भरतु राम प्रिय पुनि लघु भ्राता | कस न होइ मगु मंगलदाता ||
सिद्ध साधु मुनिबर अस कहहीं | भरतहिं निरखि हरषि हिय लहहीं ||
देखि प्रभाउ सुरेसहि सोचू | जगु भल भलेहि पोच कहुँ पोचू ||
गुरु सन कहेउ करिअ प्रभु सोई | रामहिं भरतहिं भेंट न होई ||"

(ग) "माई साँवरे रँग राँची || टेक ||
साज सिंगार बाँध पग घूँगर, लोकलाज तज णाँची ||
गयाँ कुमत लयाँ साधाँ संगत स्याम प्रीत जग साँची |
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल ब्याल री बाँची |
स्याम विणा जग खाराँ लागाँ, जगत बाताँ काँची |
मीराँ सिरि गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची ||

X279YB832FFX279YB832FFX279YB832FFX279YB832FF

प्रश्न २. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए | **(३०)**

(च) सूरदास कृत भ्रमरगीत के काव्य-सौंदर्य को सोदाहरण से समझाइए |

(छ) तुलसी का समस्त काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है |' इस उक्ति के अनुसार सोदाहरण देकर समीक्षा कीजिए |

(ज) मीरा के काव्य में विरह भावना किस तरह से प्रस्तुत हुई हैं, सोदाहरण देकर समझाइए |

प्रश्न ३. निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणियाँ लिखिए | **(१५)**

(प) कृष्ण काव्य धारा में सूरदास का महत्व |

(फ) तुलसी की भक्ति भावना |

(ब) मीरा के काव्य में भक्ति का स्वरुप |

****

X279YB832FFX279YB832FFX279YB832FFX279YB832FF